❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 45, अंक 22 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 मार्च, 2022 से रविवार 3 अप्रैल, 2022
विक्रमी सम्वत् 2079 सृष्टि सम्वत् 1960853123
दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक सभा की ओर से विश्व की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्यसमाजों, आर्य संस्थानों एवं आर्यजनों की सेवा में

वैदिक नव वर्ष एवं 148वें आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर विशेष निर्देश

विश्व की समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, प्रतिष्ठानों एवं आर्यजनों का आह्वान करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने कहा कि – वैश्विक महामारी कोरोना के कारण दो वर्ष के उपरान्त स्थितियां सामान्य हुई हैं और वैदिक नववर्ष – नव सम्वत्सर 2079 और 148वां आर्यसमाज स्थापना दिवस हम सबको पुन: सक्रिय होने का निमन्त्रण लेकर आया है। अत: इस नव वर्ष और आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर –

★ सभी आर्यजन अपने घरों पर यज्ञ करें। ★ अपने घरों और आर्यसमाज मन्दिरों को लड़ियों /दीपमालिकाओं से प्रकाशित करें। ★ अपने पास-पड़ौस में मिठाईयां बांटें। ★ नव वर्ष और आर्यसमाज स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दें। ★ आर्यसमाजों मन्दिरों में तथा उससे बाहर भी स्थापना दिवस मनाएं। ★ यज्ञ में क्षेत्र के उच्चाधिकारियों/प्रतिष्ठित महानुभावों को यजमान बनाएं। ★ आर्यसमाज के सब सदस्यों, अपने परिचितों, मित्रों, दोस्तों, रिश्तेदारों को नव वर्ष और आर्यसमाज स्थापना दिवस के शुभकामना सन्देश व्हाट्सएप्प, टेलिग्राम, ईमेल, ट्वीटर आदि सोशल मीडिया माध्यमों से प्रेषित करें।

वैदिक नववर्ष एवं आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस की बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं

नव वर्ष है, नव हर्ष है, नव जीवन का उत्कर्ष है। नव संवत्सर प्रतिपदा 2079 के शुभ आगमन के अवसर पर विश्वव्यापी आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस की समस्त आर्यजनों सहित सभी देशवासियों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं हादिक शुभकामनाएं *– धर्मपाल आर्य, प्रधान,*

नव वर्ष है, नव हर्ष है, नव जीवन का उत्कर्ष है। नव संवत्सर प्रतिपदा 2079 के शुभ आगमन के अवसर पर विश्व व्यापी आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस की समस्त आर्यजनों सहित सभी देशवासियों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से बहुत-बहुत बधाई एवं हादिक शुभकामनाएं।

आइए, इस अवसर पर हम अपने वैदिक धर्म, संस्कृति, संस्कार, परम्परा और मान्यताओं के प्रचार प्रसार के लिए अपने मन को संकल्पित करते हुए स्मरण करें उन महत्वपूर्ण पलों को जब 148 वर्ष पूर्व चैत्र मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि को युगप्रवर्तक महर्षि देव दयानंद ने मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की थी। तब से लेकर अब तक आर्य समाज ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और लगातार राष्ट्र निर्माण और मानवसेवा के क्षेत्र में

नित नए आयाम स्थापित करता आ रहा है। आर्य समाज की समस्त उपलब्धियों के इस प्रेरणा पर्व के अवसर पर मैं समस्त देशवासियों को और विश्व समुदाय को मंगलमय शुभकामनाएं देते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि नववर्ष सबके लिए मंगलमय हो, सब निरोग हों, सब उन्नति प्रगति के पथ पर आगे बढ़ें, ऊंचे उठें और मानवमात्र की उन्नति के लिए भी प्रयासरत हों। क्योंकि आर्य समाज का मूलमंत्र यही है कि हम केवल अपनी उन्नति में संतुष्ट न रहें बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें।

– शेष पृष्ठ 3 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से

सेवा समर्पण के रूप में आयोजित किया गया स्मृतिशेष पद्मभूषण

महाशय धर्मपाल जी का 99वां जन्मदिवस समारोह

90 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ आर्य महानुभावों का किया गया सम्मान

26 मार्च, 2022, नई दिल्ली। संसार का उपकार करना, आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। इस भावना और कामना को साकार करने के लिए आर्य समाज पिछले 148 वर्षों से निरंतर प्रयास रत है। सेवा साधना के इस क्रम में हमारे पूर्वजों ने जो हमें रास्ता दिखाया उस पर ही आर्य समाज लगातार आगे बढ़ रहा है। आर्य समाज द्वारा सेवा साधना की गतिशील अनवरत यात्रा में पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का योगदान भी अनुकरणीय है। आपने जीवन भर महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं के अनुरूप आचरण और व्यवहार

स्व. महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से सेवा बस्तियों में चल रहे प्रकल्पों से जुड़े कार्यकर्ताओं को किया गया सम्मानित

करते हुए आर्यसमाज के सेवा प्रकल्पों को आगे बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने का प्रशंसनीय कार्य किया है। इसलिए तो 26 मार्च 2022 को समूचे सोशल मीडिया पर स्मृति शेष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को उनके 99वें जन्मदिन पर देश-विदेश के आर्यजनों द्वारा श्रद्धांजलि देकर सेवा समर्पण की प्रेरणाओं का प्रचार प्रसार करने का तांता लगा रहा। सभी आर्य जनों ने महाशय जी को श्रद्धा निष्ठा के साथ याद किया।

– शेष पृष्ठ 5 एवं 7 पर

देववाणी-संस्कृत

इन्द्र शत्रु और मित्र रहित

यदचरस्तन्वा वावृधानो बलानीन्द्र प्रब्रुवाणों जनेषु।
मायेत्सा ते यानि युद्धान्याहुर्नाद्य शत्रुं ननु पुरा विवित्से।। -ऋ. 10/54/2
ऋषिः **बृहदुक्थो वामदेव्यः**।। देवता - **इन्द्रः**।। छन्दः **विराट्त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **इन्द्र**=हे इन्द्र! **यत् तन्वा वावृधानः**= जो तू शरीर के साथ बढ़ता हुआ **अचरः**=विचरता है जनेषु बलानि **प्रब्रुवाणः**=मानों मनुष्यों में अपने बलों को ख्यापित करता हुआ विचरता है। **यानि युद्धानि आहुः**= या जो यह वर्णन है कि तूने युद्ध किये हैं, **सा ते माया इत्**= यह सब तेरी माया ही है। **न अद्य शत्रुम्**= असल में तो न तेरा कोई आज शत्रु है **ननु पुरा विवित्से**= और न कभी पहले तूने अपना कोई शत्रु जाना है।

विनय - हे इन्द्र परमेश्वर! जो हम वेदों में भी युद्ध-वर्णन पाते हैं कि इन्द्र ने वृत्र को मारा, इन्द्र ने अपने वज्र से अमुक-अमुक असुरों का संहार किया, इन्द्र सोम को पीकर मस्त होकर बड़े पराक्रम के कार्य करता है, इन्द्र हवि को खाता है और हवि देने वाले को धन देता है. ये सब वर्णन आलंकारिक हैं। स्थूल जगत् में रहने वाले, स्थूल बुद्धिवाले हम मनुष्यों के हृदयों पर उसी वर्णन का प्रभाव होता है जो हमारे-जैसा वर्णन हो, अतएव तुम्हारे शरीर का वर्णन किया जाता है, तुम्हारे युद्धों का वर्णन किया जाता है। हम माया में रहने वालों को मायारूप से ही किया गया तुम्हारा वर्णन समझने योग्य होता है। वास्तव में न तुम्हारा कोई शरीर है और न कोई भौतिक वज्र है। तुम्हारा शत्रु त्रिकाल में भी कौन हो सकता है? तुम्हारी प्रकृति, तुम्हारी माया, सब-कुछ अपने अटल नियमों से चल रही है। पाप का फल दु:ख और पुण्य का फल सुख स्वभावतः हो रहा है। तुम न किसी के शत्रु हो ओर न मित्र हो। तुम्हारी असली शक्ति की हम कल्पना तक नहीं कर सकते. वह तो अविज्ञेय है। हम तो इतना ही देख सकते हैं कि जगत् में जो कुछ हरकत हो रही है, जो परिवर्तन हो रहे हैं, वे सब नाना प्रकार की शक्तियाँ हैं जो तुम्हारी ही एकमात्र शक्ति के अंश हैं। स्थूलरूप में सब शक्ति सफलता व विजय के रूप में दीखती है, अतः संसार की भाषा में तेरी अनन्त शक्ति का टूटा-फूटा वर्णन हम लोग इसी युद्ध के ढंग से किया करते हैं। तेरी अवर्णनीय शक्तियों का, बलों का ख्यापन हम मनुष्यों द्वारा और दूसरे किस प्रकार किया जाए?

परन्तु साथ ही यह भी ठीक है कि हमारे ये सब वर्णन माया है, अधूरे हैं, यह अवर्णनियों का वर्णन है; यह अज्ञेय का काम-चलाऊ ज्ञान कराना है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

वेद-स्वाध्याय

सम्पादकीय

अल्प संख्यक और बहु संख्यक का रहस्य

हिन्दू को अल्पसंख्यक दर्जा : इसे शर्म की खबर कहें या गर्व की

.....देश के आठ से नौ राज्य जहाँ हिन्दू अल्पसंख्यक हैं अगर उन्हें कम संख्या होने का दर्जा मिल गया तो क्या फायदा होगा। इसे समझने के लिए पहले थोड़ी सी देश की तस्वीर समझ ले अल्पसंख्यक होने का फायदा समझ लें। एक तरफ तो देश का संविधान कहता है कि यहाँ धर्म और जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होगा। लेकिन भेदभाव होता है इसका प्रमाण वे छात्रवृत्तियां हैं, जो धार्मिक आधार पर अल्पसंख्यकों के बच्चों को दी जाती हैं। अकेले 2016 से 2021 के इन पांच वर्षों में लगभग 3 करोड़ छात्रवृत्तियां भारत सरकार ने दी हैं। उनमें से अकेले मुसलमान छात्रों को 2 करोड़ 30 लाख छात्रवृत्तियां मिली हैं। ईसाई छात्रों को 37 लाख, सिखों को 25 लाख, बौद्धों को 7 लाख, जैनियों को 4 लाख, पारसियों को लगभग 5 हजार छात्रवृत्तियां मिली हैं। भले ही बीजेपी सरकार पर आरोप लगाया जाता है कि यह मुस्लिम-विरोधी है लेकिन उक्त आंकड़ा इस तर्क को सिरे से रद्द करता है और अब तो ये भी बताया जाता है कि मुस्लिम छात्राओं को बेगम हजरतमहल छात्रवृत्ति भी मिलेगी। इस पर अभी सरकार ने लगभग 10 हजार करोड़ रु. खर्च किए हैं। अगले पांच वर्ष में यह राशि दोगुनी होने की उम्मीद है। .....

राज्यः	हिंदू जनसँख्या
पंजाब-	38.40%
कश्मीर-	28.44%
मिज़ोरम -	2.75%
लक्षद्वीप-	2.5%
नगालैंड-	8.75%
मेघालय-	11.53%
अरुणाचल प्रदेश -	29%
मणिपुर-	31.39%

बात तो शर्म की है लेकिन गर्व के साथ कहना पड़ रहा है कि देश के जिन-जिन राज्यों में हिंदुओं की संख्या कम है वहां की सरकारें उन्हें अल्पसंख्यक घोषित कर सकती हैं। यानि हिन्दुओं के देश में हिन्दू ही अल्पसंख्यक हो चुके हैं। यही कारण है कि सवाल भी उठने लगे हैं कि हिंदू बहुल भारत में क्या हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा मिल सकता है? अगर राज्य सरकारें हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा देती हैं तो उसका आधार क्या होगा और इससे हिंदुओं को क्या फायदा होगा?

ये मामला कुछ ऐसे है कि जिस राज्य या देश में जिस मत सम्प्रदाय की आबादी अल्प यानि कम आंकी जाती है उन लोगों यानि कम संख्या वाले लोगों को अल्पसंख्यक माना जाता है। लेकिन भारत देश में शायद ऐसा नहीं है। यहाँ का तो तमाशा ही अलग है और राजनीती और संविधान उसके तो क्या कहने।

उदहारण के लिए जैसे एक मुस्लिम देश है 'कतर' यहाँ की आबादी करीब 29 लाख है। इसमें 68 फीसदी मुस्लिम है बाकि के 32 फीसदी में सभी लोग हैं। अब कोई पूछे कि क़तर में कौन अल्पसंख्यक है तो सबका एक ही जवाब होगा 32 फीसदी वाले लोग। लेकिन भारत में ऐसा नहीं है, यहाँ कम संख्या वाले लोग ही कई राज्यों में बहुसंख्यक यानि बड़ी संख्या में गिने जाते हैं। जैसे लक्षद्वीप में 96 फीसदी मुसलमान हैं और दो फीसदी हिन्दू। लेकिन सरकारी आंकड़ों में 96 फीसदी मुसलमान अल्पसंख्यक हैं और 2 फीसदी हिन्दूओं को बहुसंख्यक में गिना जाता है।

इसी तरह पूर्वात्तर भारत का एक राज्य है नागालैंड। यहाँ 88 फीसदी लोग ईसाई मत को मानने वाले हैं और 8 फीसदी के करीब हिन्दू हैं। लेकिन नागालैंड में भी सरकारी आंकड़ों में 88 प्रतिशत ईसाई ही अल्प संख्या वाले लोग हैं और आठ फीसदी वाले हिन्दू बहुसंख्या में आते हैं। पंजाब में सिख 58 प्रतिशत और हिंदुओं की आबादी 38 प्रतिशत है। लेकिन यहाँ भी हिन्दू ही बहुसंख्या में गिने जाते हैं। सिर्फ हिन्दू ही नहीं पंजाब में तो मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, पारसी और जैन मत को भी अल्पसंख्यक नहीं माना गया हैं।

इसके अलावा जम्मू एवं कश्मीर में 68 फीसदी मुस्लिम हैं लेकिन वो सब अल्पसंख्यक हैं। असम में 34 फीसदी मुस्लिम अल्पसंख्यक हैं तो पश्चिम बंगाल में 27 प्रतिशत मुस्लिम हैं लेकिन अल्पसंख्यक हैं। इसी तरह उत्तर प्रदेश में इराक़ से भी ज्यादा मुसलमान रहते हैं, अगर इराक़ में मुसलमान अल्पसंख्यक का दर्जा माँगने लगें तो लोग हँसते हुए पागल हो जायेंगे लेकिन यूपी में मुसलमान अल्पसंख्यक हैं।

इसमें सबसे बड़ा चुटकुला ये है कि भारत में बीस से पच्चीस करोड़ मुसलमान अल्पसंख्यक हैं और मात्र 6 हजार यहूदी मत के लोग बहुसंख्यक हैं। अब इसे इस तरीके से भी समझिये साल 2014 तक राष्ट्रीय स्तर पर 5 पंथों को ही अल्पसंख्यक का दर्जा मिला हुआ है। इसमें मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, पारसी थे। यानि तब भी 44 लाख की आबादी वाला जैन समुदाय सरकार को बहुसंख्यक लगता था। साल 2014 में केंद्र सरकार ने माना कि जैन भी अल्पसंख्यक है। वरना सबको एक ही चीज रटाई जा रही है कि 25 करोड़ मुसलमान अल्प संख्या में है। शायद इसी के बाद महाराष्ट्र सरकार की थोड़ी सी आँख खुली और उसने माना कि महाराष्ट्र में कुछ हजार की संख्या में रहने वाले यहूदी भी अल्प संख्या में हैं तब उन्हें अल्पसंख्यक होने का दर्जा दिया।

इस मामले में सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय पिछले कई वर्षों से देश की सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर संघर्ष कर रहे हैं और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम 1992 और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग की वैधता को चुनौती दे रहे हैं।

अब ऐसे में एक सवाल आता है कि यदि देश के आठ से नौ राज्य जहाँ हिन्दू अल्पसंख्यक हैं अगर उन्हें कम संख्या होने का दर्जा मिल गया तो क्या फायदा होगा। इसे समझने के लिए पहले थोड़ी सी देश की तस्वीर समझ ले अल्पसंख्यक होने का फायदा समझ लें। एक तरफ तो देश का संविधान कहता है कि यहाँ धर्म और जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होगा। लेकिन भेदभाव होता है इसका प्रमाण वे छात्रवृत्तियां हैं, जो धार्मिक आधार पर अल्पसंख्यकों के बच्चों को दी जाती हैं। अकेले 2016 से 2021 के इन पांच वर्षों में लगभग 3 करोड़ छात्रवृत्तियां भारत सरकार ने दी हैं। उनमें से अकेले मुसलमान छात्रों को 2 करोड़ 30 लाख छात्रवृत्तियां मिली हैं। ईसाई छात्रों को 37 लाख, सिखों को 25 लाख, बौद्धों को 7 लाख, जैनियों को 4 लाख, पारसियों को लगभग 5 हजार छात्रवृत्तियां मिली हैं। भले ही बीजेपी सरकार पर आरोप लगाया जाता है कि यह मुस्लिम-विरोधी है लेकिन उक्त आंकड़ा इस तर्क को सिरे से रद्द करता है और अब तो ये भी बताया जाता है कि मुस्लिम छात्राओं को बेगम हजरतमहल छात्रवृत्ति भी मिलेगी। इस पर अभी सरकार ने लगभग 10 हजार करोड़ रु. खर्च किए हैं। अगले पांच वर्ष में यह राशि दोगुनी होने की उम्मीद है।

यानि साल 1992 में अल्पसंख्यकों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए अल्पसंख्यक आयोग का गठन किया गया था। जो निरंतर अपना काम कर रहा है तो क्यों ना उन राज्यों के हिन्दू बच्चें भी इसका लाभ लें जो कम संख्या है आखिर क्यों सारी रेवड़ी इन्हें ही बांटी जाये। *- शेष पृष्ठ 7 पर*

प्रथम पृष्ठ का शेष

वैदिक नव वर्ष और आर्यसमाज के 148वें स्थापना दिवस .....

.....आइए, नव संवत्सर प्रतिपदा और आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस पर हम नई सोच, नई खोज, नई चाह, नई राह, नया चिन्तन, नए विचार के साथ आगे बढ़ें। पिछले 2 वर्षों से कोरोना महामारी की आफत से आज हमारा देश उबर रहा है, मानव मन पर छाई गहरी उदासी, निराशा, हताशा, चिन्ताए, तनाव दूर हो रहा है। एक नई आशा, उत्साह, उमंग उल्लास का जन्म हो रहा है। तो इसमें परिवेश में आइए कुछ नया सोचें, नया विचारें, और नया करने के लिए नव संकल्प लेकर उसे पूर्ण करें। क्योंकि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी यह हमारा नव संवत्सर आया है, नई-नई खुशियों की सौगात लाया है, इस अवसर पर हमने कुछ नया संकल्प नहीं किया तो पूर्व वर्षों की तरह यह वर्ष भी हमारे हाथों से देखते देखते ही निकल जाएगा और हम हाथ मलते रह जाएंगे। इसलिए समय की मूल्यवान संपदा का सदुपयोग करते हुए यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सेवा, सत्संग, साधना के पथ पर चलें और दूसरों को भी प्रेरित करें।.....

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का गौरवमय इतिहास

बन्धुओं, सृष्टि संवत का शुभारंभ आज के दिन ही हुआ था। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के राज्याभिषेक की तिथि भी यही थी। इस शुभ तिथि को ही महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी। शकारी विक्रमादित्य ने अपनी मातृभूमि को शत्रुओं से मुक्त कराकर विजयोत्सव विक्रम संवत का शुभारंभ भी आज के दिन ही किया था।

यह अलग बात है की नव संवत्सर को भारत के कुछ राज्यों में लोग चैती चांद, उगाड़ी, गुड़ी पड़वा के रूप में भी मनाते हैं। लेकिन यहां पर हमें यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि चाहे हम कितने भी नए-नए तरीकों को अपना लें, कितने भी मॉडर्न जमाने में क्यों ना चले जाएं लेकिन जो हमारी प्राचीन परंपराएं हैं, जो हमारी वैदिक मान्यताएं हैं, उनको भुलाकर हम सही अर्थों में उन्नति प्रगति और सफलताओं को प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए आधुनिक परिवेश के साथ कदम से कदम मिलाकर तो चलें, खूब उन्नति करें, आधुनिक तकनीक का प्रयोग भी करें लेकिन इसके साथ साथ अपने मानवीय मूल्यों को संजोकर रखें, उनका पूरा सम्मान करें और जो हमारे वैदिक सिद्धांत हैं, मान्यताएं हैं, जो हमारी संस्कृति है उनके अनुरूप आचरण और व्यवहार अवश्य करें।

नववर्ष पर लें सेवा का नया संकल्प

सतत परिवर्तनशील प्रकृति में नूतनता का प्रसार हो रहा है, वृक्षों के पुराने पत्ते झड़ रहे हैं, नई कोंपलें आ रही हैं, आम के वृक्षों पर बोर आ रहा है, रंग-बिरंगे फूलों से सज-धजी धरती नई नवेली दुल्हन की तरह सुसज्जित है। हवा में न ज्यादा शीतलता और न ही गर्मी का ज्यादा प्रभाव है। वातावरण स्वच्छ है, नदियों का जल भी अपने स्वरूप में पवित्रता और निर्मलता के साथ बह रहा है। उपरोक्त सारा वातावरण सन्देश दे रहा है पुराना सम्वतसर 2078 जा रहा है, और नया सम्वतसर 2079 आ है, हम नए सम्वतसर का स्वागत करें किन्तु अपने आर्य समाज के गौरवशाली महत्वपूर्ण पुराने इतिहास को, अपने पूर्वजों के तप त्याग बलिदान को, उनके प्रेरक सन्देशों को, अपनी आन, बान और शान को विस्मृत न करें, बल्कि और अधिक मजबूती के साथ संकल्प करें कि हम अपने इस नए वर्ष में एक नए जज्बे के साथ, नए उत्साह के साथ आर्य समाज के सेवाकार्यों को आगे बढ़ाएंगे, कुछ नए कीर्तिमान बनाएंगे। इसलिए अपने पुराने गौरव को सहेजकर नए वर्ष की दिव्य योजना बनाएं, नए संकल्पों का सृजन करें, और उन्हें पूर्णता प्रदान करने के लिए अपनी कमर कस लें।

आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस और महर्षि की 200वीं जन्म जयंती की करें तैयारी

यह नव संवत्सर प्रतिपदा आर्य समाज स्थापना दिवस की 148वीं वर्षगांठ है, 2 वर्ष के बाद जब हम 150 वां आर्य समाज स्थापना दिवस मनाएंगे तब हमारे आर्य समाज को डेढ़ शताब्दी पूरी हो जाएगी, उस समय हम अपना विशेष रूप से आकलन करेंगे, विश्व स्तर पर बड़े-बड़े आयोजन होंगे, नव चेतना की लहर बहेगी, उसकी तैयारी हम अभी से कर रहे हैं और आप सब भी करें, ऐसा मेरा निवेदन है। इसके साथ-साथ महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयंती भी उसके 1 वर्ष बाद आने वाली है, यह अवसर भी हम आर्यजनों के लिए अत्यंत प्रेरक सिद्ध होगा, अत: आइए हम इसके लिए भी अपने मन को संकल्पित करें।

नव संवत्सर प्रतिपदा ही है हमारा नववर्ष

प्रकृति की नवीनतम छटा और आर्य समाज स्थापना दिवस तथा नव संवत्सर के आगमन को देखकर मानव मन पर भी नवीनता का सकारात्मक असर हो रहा है और ऐसा होना स्वाभाविक भी है क्योंकि यही तो हमारा नया वर्ष है और सच्चे अर्थों में नव वर्ष का बोध तो तभी होता है जब कुछ नया घटित हो। बसंत और हेमंत ऋतु की संधि वेला में प्रकृति का नया रंग रूप का प्रकट होना, बच्चों का अगली नई कक्षा में प्रवेश, सब संस्थाओं के, कार्यालयों के और बैंकों के नए वित्तीय वर्ष का आरंभ होना, यह सब दर्शाता है कि 1 जनवरी नहीं नवसंवत्सर प्रतिपदा ही हमारा नववर्ष है। इसी दिन हम वैदिक विधि के अनुसार नव संवत्सर तथा आर्य समाज स्थापना दिवस मनाएंगे, यज्ञ रचाएंगे, सत्संग करेंगे, एक दूसरे को शुभकामनाएं और बधाई देंगे। आर्य समाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सहभागिता करेंगे। पूरी निष्ठा के साथ राष्ट्र निर्माण और मानव सेवा का व्रत लेकर जीवन सफल बनाएंगे।

आइए, नव संवत्सर प्रतिपदा और आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस पर हम नई सोच, नई खोज, नई चाह, नई राह, नया चिन्तन, नए विचार के साथ आगे बढ़ें। पिछले 2 वर्षों से कोरोना महामारी की आफत से आज हमारा देश उबर रहा है, मानव मन पर छाई गहरी उदासी, निराशा, हताशा, चिन्ताए, तनाव दूर हो रहा है। एक नई आशा, उत्साह, उमंग उल्लास का जन्म हो रहा है। तो इस परिवेश में आइए कुछ नया सोचें, नया विचारें, और नया करने के लिए नव संकल्प लेकर उसे पूर्ण करें। क्योंकि हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी यह हमारा नव संवत्सर आया है, नई-नई खुशियों की सौगात लाया है, इस अवसर पर हमने कुछ नया संकल्प नहीं किया तो पूर्व वर्षों की तरह यह वर्ष भी हमारे हाथों से देखते देखते ही निकल जाएगा और हम हाथ मलते रह जाएंगे। इसलिए समय की मूल्यवान संपदा का सदुपयोग करते हुए यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सेवा, सत्संग, साधना के पथ पर चलें और दूसरों को भी प्रेरित करें। आर्य समाज के स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर की बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

- धर्मपाल आर्य, प्रधान

स्वास्थ्य सन्देश

उत्तम स्वास्थ्य के सूत्र एवं रोगों से बचाव

आर्य संदेश के इस अंक में स्वास्थ्य रक्षा स्तंभ में हम आपको बता रहे हैं कुछ वे उपयोगी प्रचीन नुस्खे जिनको अपनाकर आप जटिल बीमारियों से स्वयं को ओर अपने परिवार स्वस्थ रख सकते हैं। लेकिन हम यहां पर यह अवश्य स्पस्ट करना चाहते हैं कि ये पुराने वैद्यों द्वारा प्रचलित घरेलू नुस्खे हैं, अत: अगर किसी को कोई खतरनाक बीमारी हो तो कृपया अपने चिकित्सक का परामर्श और उपचार ही प्रयोग में लाएं और स्वस्थ रहें। - सम्पादक

- शुगर -

गो मूत्र का सेवन करें - (10 मिलि) खाली पेट।

1. मेथीदाना 6 ग्राम थोड़ा कूट लें। सायं 250ग्रा. पानी में भिगोकर-सुबह उबालकर मेथी पानी को छानकर सेवन करें। गर्म प्रकृति वाले 1 चम्मच सौंप + मेथी भिगा दें।
2. जामुन पत्ते को 60ग्राम पानी में पीसकर सेवन करें तथा भूना हुआ चना अवश्य खायें।
3. भिण्डी 2 नग छोटा-छोटा काट कर कॉच के गिलास में पानी में भिगोकर रात्रि में डालें-सुबह खाली पेट पानी छानकर पीवें।
4. जामुन के गुठली क बीज (गिरि) छाया में सूखाकर चूर्ण बनावें। प्रात: सायं 3-3 ग्राम ताजे जल से सेवन करें।
5. गुडमार 3ग्राम + चिरायता 3ग्राम रात्रि में भिगोकर सुबह उबालकर पीवें।
6. आम पत्ते को छाया में सुखाकर 1 चम्मच चूर्ण खाली पेट सेवन करें।
7. प्रतिदिन 1 ग्राम चूने को कांच के गिलास में पानी 60ग्राम घोलकर पी लें।
8. अमरूद के 4 पत्ते खाली पेट खावें।

विशेष- भोजन के बाद पानी कभी ना पीवें। प्राणायाम- कपालभाति 20 मि, अग्निसार, उड्डयान बंध, भ्रामरी।

आसन- धनुराशन, सर्पासन, उत्तानपादान, अर्धमत्स्येन्द्रासन, मयूरासन, मण्डूकासन।

एक्युप्रेशर- लिवर पेन्क्रियाज, हार्ट, कीडनी, पेट पाइंट दबावें।

विशेष-1. जामनु पत्ते + बेलपत्ते, अमरूद पत्ते, सीताफल के पत्ते सभी समान मात्रा में तोड़कर छाया में सुखा लें। सभी का एक साथ चूर्ण बनाकर प्रात: सायं भोजन के 1 घण्टा पहले 50ग्राम पानी से सेवन करें शीघ्र लाभकारी।

2. 1 ग्राम चूना+100 ग्राम पानी में घोलकर पीवें तथा कच्चे केले कि सब्जी खावें।
3. कच्चे टमाटर का रस मधुमेह में लाभकारी होता है।
4. पान के पत्ते के साथ चार रत्ती बंग भस्म लेने से शीघ्र लाभ होता है।

लीवर (शुगर)

पीलिया - 1 ग्राम चूना + पानी 200 ग्राम में घोलकर सेवन करें।

1. पीपल वृक्ष के तीन कोमल पत्ते + मिश्रि के साथ पीसकर 100 ग्राम पानी में मिलाकर घुंट-घुंट कर पीवें। 6-7 दिन तक सेवन करें।
2. मूली के पत्तों और टहनियों का रस 50 ग्राम + मिश्रि 10 ग्राम मिलाकर प्रात: खाली पेट पीने से सब प्रकार के पीलिया में लाभ होता है। 7 दिन तक सेवन करें।
3. दूब के रस 3 चम्मच + 1 चम्मच मिश्री सेवन करें तथा जामुन पत्ते का 3-4 पत्ते सेवन करें।
4. मूली के पत्ते का रस या 4 पत्ते भोजन के बाद खावें।
5. चूना पानी पीने से पीलिया रोग नहीं होता तथा घुट-घुट कर पानी पीने से पित्त नहीं बढ़ता।
6. चिरायता या गिलोय का काढ़ा लीवर को रोगों से बचाता है।

परहेज- घी, तेल, हल्दी, बेसन। खावें - मूलीपत्ते का रस, काली मिर्च, पतली छाछ (मठ्ठा) काला नमक, मुनक्का 8-10 दाने भिगोकर।

अल्सर- आंतों में घाव

1. मेथी चूर्ण 1 चम्मच + 100 ग्रम पानी में पकाकर पीवें।
2. सेव का जूस दिन में दो बार पीवें।
3. मीठाबेर आंतों के घाव ठीक करता है।
4. दही और केला का सेवन करें।
5. मूली का रस आंतों में एन्टीसेप्टिक का काम करता है। दोपहर में लें या मूली पत्ते खावें।
6. बड़ की जटायें (मोटी) 100 ग्राम लेकर 5 लिटर पानी में उबालें। जब एक लीटर पानी शेष रह जाए तब ठंडा करके छानकर कांच के बोतल में रख लें। सुबह-शाम बड़ काढ़ा 2-2 चम्मच पिलावें।

नोट:- रीड़ की हड्डी में गेप आने पर भी काम आता है। ***- शेष अगले अंक में***

आर्यसमाज के एकमात्र कोचिंग केन्द्र - आर्य प्रतिभा विकास संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों की कार्यशाला सम्पन्न

दिनांक 29 मार्च, 2022 को आर्यसमाज की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य प्रतिभा विकास केंद्र, हरिनगर में प्रशासनिक सेवाओं - आई.ए.एस., आई.पी.एस., आई.एफ.एस., आई.आर.एस. आदि की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों की कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में सभा मन्त्री श्री विनय आर्य जी द्वारा उनकी तैयारियों के संबंध में प्रोत्साहन, प्रेरक सुझाव और समुचित मार्गदर्शन दिया गया। विद्यार्थियों ने भी इस कार्यशाला में अपने अनुभव बताते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज के प्रति आभार व्यक्त किया और कार्यशाला को उपयोगी और प्रेरक बताते हुए इस तरह के और अधिक आयोजन कराने की इच्छा प्रकट की। कार्यशाला में आर्य प्रतिभा विकास संस्थान एवं आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लाक हरिनगर के अधिकारियों ने भी भाग लिया।

1 मई को गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर में प्रवेश परीक्षा

आर्यावर्त केसरी

चण्डीगढ़। गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय करतारपुर (जालन्धर) पंजाब के गुरुकुल परिवार की ओर से सूचित करते अत्यंत प्रसन्नता हो रही कि विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी नवसत्र 2022 - 23 के नूतन प्रवेश के लिए लिखित प्रवेश परीक्षा 1 मई को छठी, सातवीं, आठवीं, नौवीं, ग्यारहवीं तथा बीए प्रथम वर्ष (विद्यालंकार) कक्षाओं के लिए प्रातः 10 बजे आयोजित की जाएगी। छात्र अपनी पूर्ण तैयारी के साथ आये। उतीर्ण विद्यार्थियों का तत्काल प्रवेश (एडमिशन) भी हो जायेगा।

यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के शुभचिंतक चण्डीगढ़ के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता आचार्य रामसुफल (हांसी) ने बताया कि ऋषि भक्त एक अदम्य साहसी युवक, रात-दिन एक कर देने वाले गुरुकुल के अथक सिपाही *डा0 उदयन आर्य (प्राचार्य) के प्राचार्यत्व (नेतृत्व) में गुरुकुल करतारपुर प्राचीन व आधुनिक समन्वय के साथ दिन दूगनी रात चौगुनी उन्नति करते हुए

आगे बढ़ता जारहा है।

ज्ञातव्य है कि प्रवेश परीक्षा फार्म जमा करवाने की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल शाम 5 बजे तक है। *उल्लेखनीय है कि गुरुकुल पूर्ण आवासीय तथा केवल लड़कों के लिए ही है, लड़कियों का प्रवेश सर्वथा वर्जित है। ध्यान रहे कि आधार कार्ड, निवास प्रमाण, आयु प्रमाण, स्वास्थ्य प्रमाण, शिक्षा प्रमाण, चरित्र प्रमाण पत्र एवं पासपोर्ट साइज के 4 फोटो साथ लायें। आवेदन आफलाइन व आंनलाइन दोनों तरह से किया जा सकता है।

आवास, पाठन, (शिक्षा) भोजन सहित सम्पूर्ण शिक्षा सर्वथा निःशुल्क (फ्री) है। प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम की जानकारी के लिए गुरुकुल की बेब साईट पर जायें, अथवा निम्न मोबाइल नम्बरों पर एक - 98030-43271 (प्राचार्य), दो - 988887-64311 (अधिष्ठाता), तीन - 94160-34759 (विशेष सहयोगी आदि सज्जनों से सम्पर्क कर सकते हैं।

अपने बालक को प्रवेश कराने से पहले गुरुकुल की अन्य विशेष जानकारी हेतु गुरुकुल देखना चाहते हैं तो बेशक देख सकते हैं। गुरुकुल में पधारने के लिए आपका बहुत-बहुत स्वागत है। अपनी संतान की अच्छी शिक्षा व उत्तम स्वास्थ्य के साथ-साथ अच्छे संस्कारों के लिए अभिभावक गण शीघ्र सम्पर्क करें, स्थान सीमित हैं।

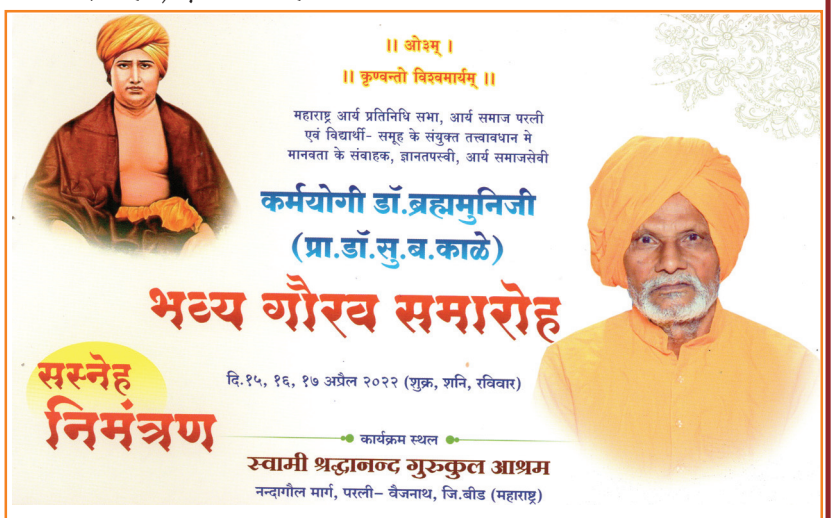

आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर शोभायात्रा सम्पन्न

आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 27 मार्च, 2022 को आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली की ओर से शोभायात्रा का आयोजन किया गया। ढोल

बैंड बाजे के साथ रानी बाग क्षेत्र के मुख्य बाजार में शोभा यात्रा का स्वागत किया गया। *- जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री*

आर्य विद्या निकेतन बामनिया में महाशय धर्मपाल जी का जन्मदिवस

अ.भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत संचालित महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. आर्य विद्या निकेतन बामनिया में महाशय जी के 99वें जन्म दिवस के अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय स्टाफ ने श्रद्धा से भाग लिया। *- प्रवीण अत्रे, प्रधानाचार्य*

मानव कल्याण के हितार्थ पर्यावरण-शुद्धि एवं मंगलकामना यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन एवं भारतीय योग संस्थान मानसरोवर गार्डन के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रकृति की गोद में पल्लवित पुष्पित वासन्तीय वेला में मानव कल्याण के हित पर्यावरण-शुद्धि एवं मंगलकामना यज्ञ का आयोजन आज रविवार 27 मार्च 2022 तदनुसार चैत्र कृष्ण/दशमी/ विक्रमी 2078 को प्रातः 7:15 से 8:15 बजे आचार्य अनिल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में बडे ही उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। मंगल मिलन की अनुभूति और भ्रातृत्व-भाव और श्रद्धा भाव से शताधिक जनों ने आहुति प्रदान की और कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। समधुर गायन विधा के धनी श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' जी ने ईश्वर भक्ति भजन से सबको आनन्दित किया भारतीय योग संस्थान की अध्यक्षा श्रीमती सुधा उपाध्याय जी ने भी यज्ञ विषय में अपने विचार व्यक्त किये। पुनः आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन के यशस्वी प्रधान श्री अशोक गुप्ता जी ने कार्यक्रम की सफलता पर सबका धन्यवाद किया और भविष्य में और अच्छे कार्यक्रमों के लिए आश्वस्त किया। कार्यक्रम में धर्माचार्य श्री प्रद्युम्न शास्त्री, श्री सुरेन्द्र ठुकराल व श्रीमती सुनीता ठुकराल, श्रीमती मन्जू गुप्ता, श्रीमती सुमित्रा गुप्ता, श्री नन्दलाल गुलाटी, श्री रमेश भाटी, श्री सरदार वजीर सिंह आदि विशेष सहयोगी रहे।

आर्यसमाज आर्य नगर पहाडगंज एवं अ. भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा 148वां आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज आर्य नगर पहाडगंज एवं अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के तत्वावधान में 148वें आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह का आयोजन 3 अप्रैल, 2022 को प्रातः 9 बजे से आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा श्री अशोक कुमार शास्त्री एवं मुख्य वक्ता डॉ. छविकृष्ण शास्त्री एवं श्री यशपाल शान्तनु होंगे।

कार्यक्रम के अन्त में ऋषि लंगर का भी आयोजन होगा।

- विजय कपूर, प्रधान

प्रथम पृष्ठ का शेष

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी का 99वां जन्मदिवस ....

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, मंत्री श्री प्रकाश आर्य, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामंत्री श्री विनय आर्य, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल इत्यादि सभी प्रांतीय सभाओं, वेदप्रचार मंडलों, आर्य शिक्षण संस्थानों के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों ने महाशय जी को स्मरण करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 26 मार्च 2022 को आर्यसमाज हनुमान रोड के प्रांगण में महाशय जी के 99 वें जन्मदिन को सेवा समर्पण के प्रेरणा पर्व के रूप में मनाया गया। इस अवसर यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ, जिसमें महाशय जी की सुपुत्री श्रीमती सुषमा शर्मा जी मुख्य

– शेष पृष्ठ 7 पर

विभिन्न विद्यालयों के बच्चों द्वारा प्रस्तुत महाशय जी के जीवन पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

90 वर्ष से अधिक आयु के आर्य महानुभावों को आर्य व्योवृद्ध सम्मान से किया गया सम्मानित

श्री कुलदीप राज बेदी (97वर्ष)

श्री रामेश्वर सपरा (94वर्ष)

श्रीमती सुशीला लूथरा (93 वर्ष)

सेवा प्रकल्पों के क्षेत्रीय संयोजकों/कार्यकर्ताओं का किया गया सम्मान

डॉ. श्रीमती चन्द्रप्रभा विद्यालंकार (91 वर्ष)

श्री रामदेव जी, श्रीमती मीना जी, श्रीमती रिंकी जी, श्री हरेराम पासवान जी, श्रीमती ज्योति कनौजिया जी, श्रीमती राजकुमारी जी, श्रीमती नीतू जी, श्री प्रफुल्ल पासवान जी आदि को महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से संचालित विभिन्न प्रकल्पों में विशेष सहयोग देने के लिए महाशय जी के 99वें जन्मदिन पर सम्मानित किया गया और परिचय कराया गया।

Creation

8th Chapter

Continue From Last issue

The creater, sustainer and dissolver of this Creation is God Himself and none else. He is the Lord of it and it all happens within his vast expanse.

Before the creation of this universe, all this was enveloped in stark darkness from all around, unintelligible like a dark night, spreadout like space, as also limited like it. God turned it into a 'created' thing, from that elementary "causative' stage, and turned it into different formations He was the lord of it, even before its manifestation in different forms. He alone has the power to create all the past, present and future creations, remaining different and aloof from animate Soul and Nature and inanimate elements, and yet involving Himself within it, which is an attribute of Soul or Jivatman.

Thus, there are different causes of this creative process. God, Soul and Nature or Prakriti. From amongst them, 'God creates it as a 'causative' creator, without involving within it; 'Prakriti' is the ingredient 'material cause', changeble into different forms; and 'Soul' or 'Atman' as a "general causative', because he alone selects and uses different created materials towards his own ends, and thus,. involves himself within the functioning of this universe or creation. There fore, it is totally mischievious to call GOD alone as the sole 'Cause' of this universal creation. And it is also against the proclamations of Vedas.

It must be understood that 'Omnipotence' of God does not mean that He is capable of creating the other two 'cause-elements' as well. Nay, they are independent causes. God's omnipotence means only that He can fulfil all His actions without any help from without. He is formless, Has the form carries its own attributes related to time and space, etc., and thereby contradicts the theory of 'Omnipresence' of GOD. And it is due to this formlessness alone that being Omnipresen the carries all the universal activity within his embryo.

As the creation is massive as well as non-moving, its 'ingredient-cause' must also be of the same nature; because the result must conform with its own cause. Even God cannot contravene this principle. No doubt, a creater or an agent is needed for causing such a result, because no action is possible without the 'agent'. It must also be noted in this connection that the nature or Prakriti is eternal only in its preleminary 'minutest' form' as the created 'forms' are borne out by the principles of 'combi- nation' and 'separation' generating and destroying the forms', respectively. And no generating thing can become eternal, as it will naturally be destroyed as well. This minute and unseen nature has to pass through many stages to come into visual 'forms'. Through God causes all this conversion, i. e. 'creation' still He remains unattached and thereby uninvolved and unaffected by birth and death which is the result of the processes known as 'Combination' and 'Separation'. It is God, Who allots and associates different 'bodies' to different 'souls', according to their qualities, attributes,' actions and nature.

This creative process is a complicated one. In the begining of all the creations, simultaneously several pairs of young people are created as the result of the kindness. of God and without going through the sexual reproduction. Thereafter, the process of sexual reproduction starts, as a rule.

To be continued.....

With thanks : "Flash of Truth"

by Satyakam Verma :
Abridged form of
'Satyarth Prakash' by
Maharishi Dayanand Saraswati

प्रेरक प्रसंग

श्रद्धा सजीव होकर झूमती थी

आर्यसमाज के आदि काल में आर्यों के सामने एक समस्या थी। अच्छा गानेवाले भजनीक कहाँ से लाएँ। इसी के साथ जुड़ी दूसरी समस्या सैद्धान्तिक भजनों की थी। वैदिक मन्तव्यों के अनुसार भजनों की रचना तो भक्त अमींचन्दजी, चौधरी नवलसिंहजी, मुंशी केवल कृष्ण जी, वीरवर चिरंजीलाल और महाशय लाभचन्दजी ने पूरी कर दी, परन्तु प्रत्येक समाज के साप्ताहिक सत्संग में भजन गाने के लिए अच्छे गायक की आवश्यकता थी। नगरकीर्तन आर्यसमाज के प्रचार का अनिवार्य अंग होता था। उत्सव पर नगर कीर्तन करते हुए आर्यलोग बड़ी श्रद्धा व वीरता से धर्मप्रचार किया करते थे।

पंजाब में यह कमी और भी अधिक अखरती थी। इसका एक कारण था। सिखों के गुरुद्वारों में गुरु ग्रन्थसाहब से भजन गाये जाते हैं। ये भजन तबला बजानेवाले रबाबी गाते थे। रबाबी मुसलमान ही हुआ करते थे। मुसलमान रहते हुए ही वे परम्परा से यही कार्य करते चलते आ रहे थे। यह उनकी आजीविका का साधन था।

आर्यसमाज के लोगों को यह ढंग न जँचा। कुछ समाजों ने मुसलमान रबाबी रक्खे भी थे फिर भी आर्यों का यह कहना था कि मिरासी लोगों या रबाबिया के निजी जीवन का पता लगने पर श्रोताओं पर उनका कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। सिखों की भाँति भजन लोग सुनना चाहते थे।

तब आर्यों ने भजन-मण्डलियाँ तैयार करनी आरम्भ कीं। प्रत्येक समाज की अपनी-अपनी मण्डली होती थी। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब सिन्ध में सब प्रमुख समाजों ने भजन मण्डलियाँ बना लीं। महात्मा मुंशीराम वकील, न्यायाधीश केवलकृष्णजी (मुंशी), महाशय शहजादा नन्द जी लाहौर, चौधरी नवलसिंह जी जैसे प्रतिष्ठित आर्यपुरुष नगरकीर्तनों में आगे गाया करते थे। टोहना (हरियाणा) के समाज की मण्डली में हिसार जिले के ग्रामीण चौधरी जब जुड़कर दूरस्थ समाजों में जसवन्तसिंह वर्माजी के साथ गर्जना करते थे तो समाँ बँध जाता था।

लाहौर में महाशय शहजादानन्दजी को भजन मण्डली तैयार करने का कार्य सौंपा गया। वे रेलवे में एक ऊँचे पद पर आसीन थे। उन्हें रेलवे में नौकरी का समय तो विवशता में देना ही पड़ता था, उनका शेष सारा समय आर्यसमाज में ही व्यतीत होता था। नये-नये भजन तैयार करने की धुन लगी रहती। सब छोटे-बड़े कार्य आर्यलोग आप ही करते थे। समाज के उत्सव पर पैसे देकर अन्यों से कार्य करवाने की प्रवृत्ति न थी।

इसका अनूठा परिणाम निकला। आर्यों की श्रद्धा-भक्ति से खिंच-खिंचकर लोग आर्यसमाज में आने लगे। लाला सुन्दरदास भारत की सबसे बड़ी आर्यसमाज (बच्छोवाली) के प्रधान थे। आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर जब कोई भजन गाने के लिए वेदी पर बैठता तो लाला सुन्दरदासजी स्वयं तबला बजाते थे। जो कार्य मिरासियों से लिया जाता था, उसी कार्य को जब ऐसे पूज्य पुरुष करने लग गये तो यह दृश्य देखकर अपने-बेगाने भाव-विभोर हो उठते थे।

ऐसा लगता था मानो श्रद्धा सजीव होकर झूम रही है।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

संस्कृत वाक्य प्रबोध

लेख्यलेखकप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
787. मनुष्यो लेखाभ्यासं सम्यक् कुर्यात्।	मनुष्य लिखने का अभ्यास अच्छी प्रकार करे।
788. अयमत्युत्तममक्षरविन्यासं करोति।	यह अत्युत्तम अक्षर लिखता है।
789. लेखनीं सम्पादय।	कलम बनाओ।
790. मसीपात्रामानय।	दवात ला।
791. पुस्तकं लिख।	पोथी लिख।
792. तत्र पत्रं लिखित्वा प्रेषितं न वा?	वहां चिट्ठी लिखकर भेजी या नहीं?
793. प्रेषितं पञ्च दिनानि व्यतीतानि तस्य प्रत्युत्तरमप्यागतम्।	भेजी, पांच दिन-बीते, उसका जवाब भी आ गया।
794. सुवर्णाक्षराणि लिखितुं जानासि न वा?	सुनहरी अक्षर लिखने जानता है या नहीं?
795. जानामि तु परन्तु सामग्रीसञ्चयने लेखने च विलम्बो भवति।	जानता तो हूँ परन्तु चीज इकट्ठी करने और लिखने में देर होती है।
796. यद्यंगुष्ठतर्जनीभ्यां लेखनीं गृहीत्वा मध्यमोपरि संस्थाप्य लिखेत्तर्हि प्रशस्तो लेखो जायेत।	जो अंगूठा तर्जनी अंगुली से कलम को पकड़कर बीचली अंगुली पर रखकर लिखे तो बहुत अच्छा लेख होवे।
797. अयमतीव शीघ्रं लिखति।	यह अत्यन्त जल्दी लिखता है।
798. एतस्य लेखनी मन्दा चलति।	इसकी लेखनी धीरे चलती है।
799. यदि त्वमेकाहं सततं लिखेस्तर्हि कियत: श्लोकांल्लिखितुं शक्नुया:?	यदि तू एक दिन निरन्तर लिखे तो कितने श्लोक लिख सके?
800. पञ्चशतानि।	पांच सौ।
801. यदि शिक्षां गृहीत्वा शनै: शनैर्लिखितुमभ्यस्येत्तर्ह्यक्षराणां सुन्दरं स्वरूपं स्पष्टता च जायेत।	यदि शिक्षा ग्रहण करके धीरे-धीरे लिखने का अभ्यास करे तो अक्षरों का दिव्य स्वरूप और स्पष्टता होवे।
802. अस्मिंल्लाक्षारसे कज्जलं सम्मेलितं न वा?	इस लाख के रस में कज्जल मिलाया है या नहीं?
803. मेलितं तु न्यूनं खलु वर्त्तते।	मिलाया तो है परन्तु थोड़ा है।
804. मनुष्यैर्यादृश: पठनाभ्यास: क्रियेत तादृश एव लेखनाभ्यासोऽपि कर्त्तव्य:।	मनुष्य लोग जैसा पढ़ने का अभ्यास करें वैसा ही लिखने का भी करना चाहिये।
805. मया वेदपुस्तकं लेखयितव्यमस्त्येकेन रूप्येण कियत: श्लोकान् दास्यसि?	मुझको वेद का पुस्तक लिखाना है, एक रुपये से कितने श्लोक देगा?

क्रमश: - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 5 का शेष

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी ....

यजमान बनीं और अन्य कई यजमानों के साथ-साथ दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल जी सहित सभा के अधिकारियों ने आहुति देकर महाशय जी के द्वारा संचालित सेवा कार्यों को स्मरण किया। सभी यजमानों को दिल्ली सभा, आर्य केंद्रीय सभा, अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ, वेदप्रचार मंडलों के अधिकारियों, आर्य समाजों के प्रधान, मंत्रियों आदि ने पुष्प वर्षा करके आशीर्वाद दिया। इसके बाद भजनोपदेशक श्री राजवीर शास्त्री जी ने ईश्वर भक्ति के मधुर भजन प्रस्तुत कर सबको भाव विभोर कर दिया। महाशय जी के जीवन पर आधारित डाक्यूमेंट्री देखकर सभी आर्यजन उनके सेवा समर्पण की प्रशंसा कर रहे थे।

यज्ञ के उपरांत महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल शादी खामपुर के विद्यार्थियों ने महाशय जी के यशस्वी जीवन पर आधारित नाटिका प्रस्तुत की, महाशय जी के नाम के साथ महाशय शब्द कैसे जुड़ा, वे किस तरह 98 वर्ष की अवस्था तक सेवा कार्य करते थे, पीठ ठोककर ओम के उच्चरण के साथ आशीर्वाद देते थे, इस पूरे नाटक मंचन से सारा वातावरण महाशय मय हो गया था और उपस्थित आर्य जन भावविभोर हो गए थे। इसके बाद दिल्ली सभा द्वारा संचालित घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ की लोकप्रिय योजना कैसे दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर सेवा बस्तियों में गतिशील है, दिल्ली सभा के संवर्धक घर-घर जाकर यज्ञ करा रहे हैं, उन सेवा बस्तियों में यज्ञ के आयोजन कराने वाले प्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया। इसमें श्रीमती राजकुमारी, दयानंद विहार, श्रीमती ज्योति कनोजिया, जनता केम्प, विकास नगर, ओखला, श्री हरे राम पासवान, जवाहर कैम्प, कीर्ति नगर, श्री प्रफुल्ल पासवान, जवाहर कैम्प, कीर्ति नगर, श्री पवन कुमार, मॉडल टाउन, श्रीमती रिंकी, दयाल सिंह कालोनी, ईश्वर नगर, श्री रामदेव प्रधान, मायापुरी और अन्य अनेक स्थानों पर यज्ञ प्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया।

महाशय जी के 99वें जन्मदिन पर आर्य वयोवृद्ध सेवा सम्मान देने की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष दिल्ली के 90 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ आर्य महानुभावों डॉ. श्रीमती चन्द्रप्रभा विद्यालंकार (91) न्यू राजेंद्र नगर, श्री कुलदीप राजवेदी (97) करोलबाग, श्री रामचन्द्र अग्निहोत्री (98) लक्ष्मी नगर, श्रीमती मोतिया देवी आहुजा (96) पटेल नगर, श्री रामेश्वर सपरा (94) रोहिणी, श्रीमती सुशीला लूथरा (93) राजेंद्र नगर, श्री ऋषि राज तनेजा (90) कीर्ति नगर, डॉ सुमेधा वेदालंकार, (91) गुलमोहर पार्क को आर्य वयोवृद्ध सेवा सम्मान देकर दिल्ली सभा, आर्य केंद्रीय सभा, वेदप्रचार मंडल और विभिन्न आर्य समाजों के सम्मानित अधिकारियों, स्त्री पुरुषों द्वारा आशीर्वाद प्राप्त किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली की लगभग सभी आर्य समाजों के अधिकारी, गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम के ब्रह्चारी, आर्य कन्या गुरुकल की ब्रह्मचारिणी, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की कई शाखाओं के आर्य वीर, स्त्री, परुष, युवा, किशोर, बच्चे और वृद्धजन हर आयुवर्ग के आर्य जन उपस्थित थे। बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम सबको बहुत पसंद आए। प्रेम प्रसन्नता के वातावरण में आर्यजनों ने महाशय जी को स्मरण किया और आर्य समाज द्वारा संचालित सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए अपने मन को संकल्पित किया। ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन हुआ।

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की वैदिक रीति से व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। - ***संयोजक***

पृष्ठ 2 का शेष

हिन्दू को अल्पसंख्यक दर्जा .....

अल्पसंख्यक होने का अर्थ उन्हें सरकारी नौकरियों में रिजर्वेशन, बैंक से सस्ता लोन और अल्पसंख्यक दर्जा प्राप्त शिक्षण संस्थानों में दाखिले के समय प्रमुखता मिलती है। उदाहरण के लिए जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी को धार्मिक अल्पसंख्यक संस्थान का दर्जा मिला हुआ है। यहां करीब 50 प्रतिशत सीटें मुस्लिम समाज के बच्चों के लिए आरक्षित हैं। यानि जय भीम-जय मीम यहाँ नहीं चलता। यहां जाति आधारित कोटा सिस्टम नहीं चलता या कहो दलित आरक्षण मुस्लिम यूनिवर्सिटी में नहीं चलता। एक जामिया मिलिया इस्लामिया ही क्यों अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी जैसे कई अल्पसंख्यक संस्थान देश में हैं। किसी में भी दलित आरक्षण नहीं चलता। सबसे बड़ी बात ये कि अल्पसंख्यक समाज के लिए इस तरह के संस्थान खोलने में सरकार अलग से सहायता भी करती है।

आज देश में करीब 8 राज्य और केंद्र शासित प्रदेश ऐसे हैं जहां हिंदू आबादी 50 प्रतिशत से कम है। इनमें मणिपुर, पंजाब, अरुणाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, मेघालय, नागालैंड, लक्षद्वीप और मिजोरम शामिल है। यानि जिन राज्यों में हिंदू बहुल नहीं है वहां हिंदुओं को अल्पसंख्यक का दर्जा देने की मांग काफी पुरानी है। अटल बिहारी वाजपेयी के समय से इस मुद्दे को उठाया जा रहा है। लेकिन केंद्र सरकार इससे बच रही थी। अब इस पर सुप्रीम कोर्ट संज्ञान ले रही है आगे भविष्य में पता चलेगा क्या होगा-क्या नहीं। बस शर्म की बात ये है कि हिन्दुओं को अपने देश में अल्पसंख्यक होकर अपने कम होने की लड़ाई न्यायालय में लड़नी पड़ रही है।

- ***सम्पादक***

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2
एम ब्लॉक, रोड नं-1, नई दिल्ली-48

प्रधान : श्री सहदेव नांगिया
मन्त्री : श्री एस. के. कोहली
कोषाध्यक्ष : श्री प्रिय व्रत

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

शोक समाचार

श्री गणेशदास गोयल जी का निधन

आर्यसमाज नया बांस दिल्ली के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी, दानवीर, साहित्य प्रेमी, गुरुकुल बृजघाट के संस्थापक श्री गणेशदास गोयल जी का दिनांक 25 मार्च, 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 1 अप्रैल, 2022 को एजीसी.आर. कालोनी, कम्युनिटी सैन्टर मन्दिर (कडकड़डूमा कोर्ट के पास) दिल्ली में सम्पन्न होगी।

श्रीमती प्रेमवती जी का निधन

आर्यसमाज की सहयोगी संस्था आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के श्री दिनेश शास्त्री जी की बुआ श्रीमती प्रेमवती जी का दिनांक 27 मार्च, 2022 को 85 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 7 अप्रैल, 2022 को ग्राम संकेत वन, बरसाना मथुरा में होगी।

श्री मदन प्रसाद सिंह जी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में चालक के रूप में कार्यरत एवं अनेक कायो में सहयोगी श्री मदन प्रसाद सिंह जी का दिनांक 19 मार्च, 2022 को लम्बी बीमारी के उपरान्त निधन हो गया। अगले दिन उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किराड़ी शमशान भूमि पर किया गया। उन्हें अन्तिम स्टेज का कैंसर था।

श्री श्रीदत्त यादव जी का निधन

आर्यसमाज दरियागंज के वरिष्ठ सदस्य एवं पूर्व अधिकारी श्री श्रीदत्त यादव जी का दिनांक 24 मार्च, 2022 को लगभग 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 1 अप्रैल, 2022 को आर्यसमाज दरियागंज सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 28 मार्च, 2022 से रविवार 3 अप्रैल, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 30-31/3-1/4/2022 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 मार्च, 2022

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल शादीखामपुर का रजत जयन्ती समारोह

आर्य समाज शादीपुर ख़ामपुर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल का रजत जयंती समारोह 23 मार्च 2022 को प्रात: 09.30 यज्ञ से कार्यक्रम आरंभ हुआ। विद्यालय के छात्र छात्राओं ने अध्यापिकाओं के नेतृत्व में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया। विद्यालय की स्थापना 23 मार्च 1997 को शहीदी दिवस पर विद्वान तपस्वी स्वामी दीक्षानन्द के द्वारा की गई थी। इस अवसर पर महान स्वाधीनता संग्राम के क्रांतिकारी शहीद ए आजम भगत सिंह जी, राजगुरु जी और सुखदेव जी को याद किया गया। श्री विनय आर्य महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य सतीश चड्ढा, महामंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य, श्री अरुण प्रकाश वर्मा व श्री ओम प्रकाश आर्य, उपप्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अतिथि रूप में उपस्थित रहें।

कार्यक्रम का संचालन विद्यालय प्रबंधक एवं आर्यसमाज के मंत्री श्री कृपालसिंह आर्य ने किया। इस कार्यक्रम में श्री भीम सेन जी, प्रधान, श्री रोहिला जी, श्री सतीश

रोहिला, श्रीमती सरोज यादव, विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती नीरज मैंदीरत्ता, सहित अध्यापिकाओं एवं प्रतिष्ठित अभिभावकों की उपस्थित रही। - ***मन्त्री***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
आर्यजनों की सहायतार्थ
तैयार मोबाइल एप्प
आर्य लोकेटर
आर्य समाज मंदिर, विद्यालय, गुरुकुल आदि आर्य संस्थाओं को मानचित्र पर देखें। यदि आपकी संस्था अभी तक इस एप्लीकेशन पर सूचीबद्ध नहीं है तो कृपया अपनी संस्था को आज ही रजिस्टर करें।
Google Play
Arya Locator
आज ही प्ले स्टोर से डाउनलोड करें

देश और समाज विभाजन के
षड़यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

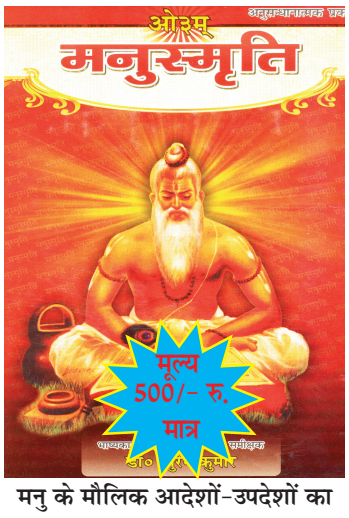

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : ~~600~~/- 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह